

## श्री गायत्री चालीसा

ह्रीं श्रीं क्लीं मेधा प्रभा जीवन ज्योति प्रचण्ड ।

शान्ति कान्ति जागृत प्रगति रचना शक्ति अखण्ड ॥ १ ॥

जगत जननी मङ्गल करनिं गायत्री सुखधाम ।

प्रणवोऽसावित्री स्वधा स्वाहा पूरन काम ॥ २ ॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी ।

गायत्री नित कलिमल दहनी ॥ ३ ॥

अक्षर चोविस परम पुनीता ।

इनमेऽवसेऽशान्ति श्रुति गीता ॥ ४ ॥

शाश्वत सतोऽङ्गी सत रूपा ।

सत्य सनातन सुधा अनूपा ।

हंसारूढ सितंबर धारी ।

स्वर्ण कान्ति शुचि गगन-विहारी ॥ ५ ॥

पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला ।

शुद्ध वर्ण तनु नयन विशाला ॥ ६ ॥

ध्यान धरत पुलकित हित हो—ई ।

सुख उपजत दुःख दुर्मति खो—ई ॥ ९ ॥

कामधेनु तुम सुर तरु छाया ।

निराकार की अद्भुत माया ॥ ८ ॥

तुम्हरी शरण गँहै जो को—ई ।

तँरै सकल संकट सों सो—ई ॥ ९ ॥

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली ।

दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ॥ १० ॥

तुम्हरी महिमा पार न पावैंग ।

जो शारद शत मुख गुन गावैंग ॥ ११ ॥

चार वेद की मात पुनीता ।

तुम ब्रह्मणी गौरी सीता ॥ १२ ॥

महामन्त्र जितने जग माहींग ।

को—ई गायत्री सम नाहींग ॥ १३ ॥

सुमिरत हिय मेंग ज्ञान प्रकासै ।

आलस पाप अविद्या नासै ॥ १४ ॥

सृष्टि बीज जग जननि भवानी ।

कालरात्रि वरदा कल्याणी ॥ १५ ॥

ब्रह्मा बिष्णु रुद्र सुर जेते ।

तुम सोऱ पावेऱ सुरता तेते ॥ १७ ॥

तुम भक्तन की भकत तुम्हारे ।

जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे ॥ १९ ॥

महिमा अपरम्पार तुम्हारी ।

जय जय जय त्रिपदा भयहारी ॥ १८ ॥

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना ।

तुम सम अधिक न जगमे आना ॥ १९ ॥

तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा ।

तुमहिं पाय कछु रहै न कलेसा ॥ २० ॥

जानत तुमहिं तुमहिं है जा—ई ।

पारस परसि कुधातु सुहा—ई ॥ २१ ॥

तुम्हरी शक्ति दैपै सब ठा—ई ।

माता तुम सब तौर समा—ई ॥ २२ ॥

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे ।

सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे ॥२३॥

सकल सृष्टि की प्राण विधाता ।

पालक पोषक नाशक त्राता ॥ २४ ॥

मातेश्वरी दया व्रत धारी ।

तुम सन तरे पातकी भारी ॥ २५ ॥

जापर कृपा तुम्हारी हो—ई ।

तापर कृपा करेण सब को—ई ॥ २६ ॥

मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावेण ।

रोगी रोग रहित हो जावेण ॥ २७ ॥

दरिद्र मिटे कटे सब पीरा ।

नाशे दुःख हरे भव बीरा ॥ २८ ॥

गृह क्लेश चित चिन्ता भारी ।

नासै गायत्री भय हारी ॥२९॥

सन्तति हीन सुसन्तति पावे॥

सुख संपति युत मोद मनावे॥ ३०॥

भूत पिशाच सबै भय खावे॥

यम के दूत निकट नहिं आवे॥ ३१॥

जे सधवा सुमिरे॥ चित ठा—ई ।

अछत सुहाग सदा शुबदा—ई ॥ ३२ ॥

घर वर सुख प्रद लहे॥ कुमारी ।

विधवा रहे॥ सत्य ब्रत धारी ॥ ३३॥

जयति जयति जगदंब भवानी ।

तुम सम थोर दयालु न दानी ॥ ३४ ॥

जो सद्गुरु सो दीक्षा पावे ।

सो साधन को सफल बनावे ॥ ३५ ॥

सुमिरन करे सुकृषि बडभागी ।

लहे मनोरथ गृही विरागी ॥ ३६ ॥

अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता ।

सब समर्थ गायत्री माता ॥ ७७ ॥

ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी ।

आरत अर्थाँ चिन्तित भोगी ॥ ७८ ॥

जो जो शरण तुम्हारी आवे ।

सो सो मन बांछित फल पावे ॥ ७९ ॥

बल बुधि विद्या शील स्वभा—७ ।

धन वैभव यश तेज उछा—७ ॥ ८० ॥

सकल वदेउं उपजेउं सुख नाना ।

जे यह पाठ करै धरि ध्याना ॥

यह चालीसा भक्ति युत पाठ करै जो को—६ ।

तापर कृपा प्रसन्नता गायत्री की होय ॥

Encoded and proofread by Sunder Hattangadi

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

Last updated त्oday

<http://sanskritdocuments.org>

Gayatri Chalisa Lyrics in Bengali PDF

% File name : gayatrii40.itx

% Category : chAlisA

% Location : doc\\_z\\_otherlang\\_hindi

% Language : Hindi

% Subject : hinduism/religion

% Transliterated by : Sunder Hattangadi

% Proofread by : Sunder Hattangadi

% Description-comments : Devotional hymn to gayatrii Devi, of 40 verses

% Latest update : March 14, 2005

% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

% Site access : <http://sanskritdocuments.org>

%

% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study

% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of

% any website or individuals or for commercial purpose without permission.

% Please help to maintain respect for volunteer spirit.

%

We acknowledge well-meaning volunteers for [Sanskritdocuments.org](http://Sanskritdocuments.org) and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.

Please check their sites later for improved versions of the texts.

This file should strictly be kept for personal use.

PDF file is generated [ December 11, 2015 ] at [Stotram](http://Stotram) Website